ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 210-211

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

चालुक्यकालीन कला मंदिर

1. शबाहत
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-07.12.2023, Revised-12.12.2023, Accepted-17.12.2023 E-mail: ansarishabahat@gmail.com

सारांशः ***भारतीय कला अत्यन्त प्राचीन एवं अद्भुत रही है। प्राचीन काल से ही भारतीय कलाओं ने अपना अद्भुत परिचय दिया है। सिन्धु सभ्यता से लेकर वर्तमान तक भिन्न–भिन्न प्रकार से विभिन्न समय काल में। भारतीय कलाओं में एक कला वास्तुकला का भी आरम्भ से ही योगदान है सिन्धु सभ्यता के बाद अनेकों वंशों में अलग–अलग वास्तुकला के नमूने देखने को मिलते हैं चाहे वह मौर्य वंश हो, या गुप्त वंश इनके बाद के वंशों में भी अत्यन्त आश्चर्यपूर्व कार्य हुए। भारत में कन्नड़ भाषी चालुक्य वंश के विषय में बात करें तो उन्होंने वास्तुकला मूर्तिकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन वास्तुकला मूर्तिकला के उदाहरणों में हम विशेषकर बादामी, आइहोल, पट्टाडक्कल क मन्दिरों समूह के विषय में जानने का प्रयास करेंगे। जो की भारतीय वास्तुकला मन्दिर निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखते है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय कला, अद्भुत, सिन्धु सभ्यता, वास्तुकला, मौर्य वंश, गुप्त वंश, चालुक्य वंश, वास्तुकला मूर्तिकला, प्रांगण।

भारत की कला सम्पूर्ण विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय कला प्राचीन काल से उसके बाद सिन्धु सभ्यता से ही आश्चर्यों का प्रतीक रही है। भारत में वास्तुकला एवं मूर्तिकला के इतिहास में दक्षिण के कन्नड़ भाषी चालुक्यों का भी विशेष योगदान रहा है। वाकाटक वंश के राजाओं के बाद भारत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ, जो लगभग 550 ई0 का समय था। चालुक्य वंश ने 550 ई0 से 1190 ई0 के मध्य कई शाखाओं में कार्य किया। इस वंश के उत्कर्ष काल में चालुक्य राजाओं द्वारा बादामी, अयहोल, पट्टडकल मन्दिरों का निर्माण कराया जो कि वास्तुकला या स्थापत्य कला, मूर्तिकला के उत्कर्ष उदाहरण हैं।

चालुक्य राजाओं की राजधानी बादामी थी। बादामी का प्राचीन नाम ''वातापी'' था। बादामी या वातापी का निर्माणकर्ता कीर्तिवर्मन को माना जाता है। बादामी में छठी–सातवीं ई0 की चार गुफाएँ हैं। जिनमें पहली गुफा भगवान शिव को समर्पित है। यह गुफा सबसे प्राचीन है। यह गुफाऐं बागलकोट कर्नाटक में स्थित है। गुफा नं0 एक में भगवान शिव को तांड़व नृत्य नटराज रूप में, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर अवतार में बनाये गये हैं।

गुफा संख्या दो और तीन विष्णु को समर्पित है इन गुफाओं में विष्णु के वाराह अतवार, त्रिविक्रमा अवतार गुरूड़ अवतार दिखाये गये हैं। इन गुफाओं की छत पर पुराणों का अंकन हुआ है। गुफा नं0 3 में त्रिविक्रम और नरसिंह अवतार भी दिखाए गये हैं। भित्तियों में भगवान शिव के विवाह के दृश्य भी उत्कीर्ण किये गये हैं।

गुफा नं0 4 जैन धर्म को समर्पित है। इसमें भगवान महावीर को बैठी अवस्था में बनाया गया है। भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति खड़ी अवस्था में बनाई गई है। इसके अलावा इस गुफा में स्तम्भों पर कई मूर्तियाँ उकेरी गई है। यह वास्तु एवं मूर्तिकला का एक अनोखा संगम है। यह गुफाएँ बलुआ पत्थर से निर्मित की गयी है।

चालुक्य वंश में इसके अलावा आयहोल और पट्टडकल की गुफाओं का निर्माण कराया। आयहोल का अन्य नाम ऐहोल भी है। आयहोल गुफाऐं भी कर्नाटक राज्य में स्थित है। ऐहोल या आयहोल में 70 मन्दिरों के अवशेष मिलते है। आइहोल या अयहोल मन्दिरों में नागर+दक्षिणी का सम्मिश्रण है यह मन्दिर 5 वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। यह बेसर शैली से निर्मित मन्दिर हैं। बादामी के चालुक्यों द्वारा स्थापत्य की शुरूआत आइहोल से ही मानी जाती है। यह कर्नाटक के बीजापुर में स्थित है। ऐहोल मन्दिर वास्तु में बौद्ध चैव्य का प्रभाव दिखाई देता है। यह मन्दिर मालप्रभा नदी के तट पर स्थित है। बादामी के पश्चिम में आइहोल में पुलकेशिन द्वितीय के समय की प्रशस्ति प्राप्त हुई है इसका निर्माण 634 ई0 में माना जाता है, इसकी रचना रविकीर्ति ने की थी। इस प्रशस्ति में राजा पुलकेशिन द्वितीय और हर्षवर्धन के युद्ध के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। इस युद्ध में राजा हर्षवर्धन की हार हुई थी।

आइहोल में 70 मन्दिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं इन सभी मन्दिरों में सबसे प्रसिद्ध मन्दिर लाडखान मन्दिर जिसे सूर्य नारायण मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मन्दिर यहाँ सबसे प्राचीन है। इसका मुखमण्डप 50 फीट का है, जो कि 112 स्तम्भों पर आधारित है। यहाँ की रचिकाओं के चित्रों में अर्द्धनारीश्वर, (दक्षिण रथिका) सूर्य (पश्चिम रथिका) चतुर्भुजी विष्णु (दक्षिण रथिका) पर बने हैं। यह मन्दिर रविकीर्ति बनाये गए हैं। इस मन्दिर के प्रांगण में नन्दी की मूर्ति बनाई गई है। इसमें गर्भगृह में शिवलिंग और नंदी एक साथ मिले हैं।

आइहोल में इसके अलावा मेगती का मन्दिर अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह मन्दिर 634 ई0 में बना जो कि एक जैन मन्दिर है। यह मन्दिर पुलकेशिन द्वितीय के समय रविकीर्ति द्वारा बनाया गया है। यह मन्दिर जितेन्द्र भवन के नाम से भी जाना जाता है। यह देवी अम्बिका को समर्पित है।

रावणफाड़ी गुफा शिव को समर्पित है यह एक शिवालय है। इस मन्दिर में नटराज (रिलीफ) यह बादामी से छोटा है। चार खम्बें हैं, यहाँ 10 हाथी वाले शिव, शिव का तांडव बनाये गये हैं सत्प मातृकाएँ शिव तांडव देख रही है यहाँ पर शिव गणों की पंक्ति वाराह अवतार, महिषासुरमर्दिनी हैं।

आइहोल का एक मन्दिर दुर्गा मन्दिर है। आरहोल का यह सर्वोत्कर्ष उदाहरण है। इसका निर्माण 8वीं शताब्दी में हुआ है। यहाँ से शिव, नरसिंह, महिषासुरमर्दिनी तथा वाराह मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

कुन्ती मन्दिर 5वीं शताब्दी में आइहोल मन्दिर का निर्माण हुआ। इस मन्दिर में जगती पार्श्व से अलंकृत है। गर्भगृह की दक्षिणी भिति पर 'महेश' की आकृति बनी है। शिव को चतुर्भुजी दिखाया गया है। गर्भगृह की उत्तरी भिति पर विष्णु की प्रतिमा बनी है, छत पर उमा, महेश विष्णु और ब्रह्मा बने हैं।

ऐहोल की मूर्तियों में अलंकारिक अंकनों में विशेष कुशलता दिखाई देती है। उनमें लयात्मकता ने उच्च स्तर को छुआ है। शरीर रचना भी हल्की पतली और लम्बी नजर आती है। धोती एवं अन्य वस्त्रों पर गहरी धारी दिखती है। ऐहोल में बना दुर्गा मंदिर चालुक्य मूर्तिशिल्प का महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। महाकूट के महाकूटेश्वर में अर्द्धनारीश्वर 'लकुलीश' और 'हरिहर' की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें लयात्मकता और गतिशीलता को देखा जा सकता है।

चालुक्य कला के यह मन्दिर विश्व प्रसिद्ध है कर्नाटक में बादामी से 10 मील की दूरी पर स्थित पट्टडकल भी एक सुप्रिसिद्ध मन्दिरों की स्थली है। यहाँ पर भी चालुक्य कालीन कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। पट्टडकल के इन मन्दिरों का निर्माण 7–8वीं शताब्दी के बीच माना जाता है। पट्टडकल में 4 नागर शैली के मन्दिर ओर 6 द्रविड़ शैली के मन्दिर मिलते हैं।

पट्टडकल में नागर शैली का सबसे प्रसिद्ध मन्दिर–पापनाथ मन्दिर है, यह मन्दिर 7वीं शताब्दी के अन्तिम चरण के निर्माण का आयताकार मन्दिर है। प्रारम्भ में इस मन्दिर में सूर्य नारायण की प्रतिमा थी। परन्तु यहाँ के शिष्यों से ज्ञात होता है कि यह एक शिव मन्दिर था।

विजेश्वर मन्दिर द्रविड़ मन्दिरों में सबसे प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर चालुक्य नरेश विजयमादित्य ने कराया था। इन्हीं के नाम पर इसका नाम विजेश्वर मन्दिर पड़ा। इसके अलावा इस मन्दिर को संगमेश्वर नाम से भी जाना जाता है।

चालुक्य राजा विक्रमादित्य के प्रधान महिषीलोकमहादेवी के द्वारा 745 ई0 में विरूपाक्ष मन्दिर का निर्माण हुआ। इसका प्राचीन नाम लोकेश्वर मन्दिर था। इस मन्दिर के तीन भाग हैं गर्भगृह, गूणमण्डप, नन्दी मण्डप। गर्भगृह की दक्षिणी भिति पर हरिहर की प्रतिमा है, यह चतुर्भुजी प्रतिमा है। गर्भगृह के अन्दर शिव लिंग बनाया गया है। इसलिए इसे शैव मन्दिर कहा जाता है। गर्भगृह के ऊपर चार फलकों वाला (पिरामिडनुमा) द्रविड़ शैली का शिखर बना हुआ है। आगे के भाग में नन्दी मण्डप प्रमुख एवं महत्वपूर्ण है।

मल्लिकार्जुन मन्दिर द्रविड़ शैली का चालुक्य कालीन त्रैलोक्य महादेवी द्वारा सन् 755 ई0 में बनवाया गया है। इस मन्दिर में भी विख्पाक्ष के समान पंचशाखा युक्त बना है। इसके द्वारा पर गंगा यमुना की आकृति बनी हुई है। यहाँ पर उमा महेश्वर, लकुलिश, हरिहर आदि रूपों का निर्माण किया गया है। इस मन्दिर के विषय में यह कहा जाता त्रैलोक्य महादेवी विक्रमादित्य द्वितीय की छोटी रानी थी, उन्होंने इस मन्दिर का निर्माण कराया था।

पट्टडकल की मूर्तियाँ चालुक्य शिल्प के उत्कर्ष को प्रदर्शित करती हैं। ये मूर्तियाँ शान्त, संतुलित, ऊर्जा से युक्त, जीवन और भव्य है। इन मूर्तियों में स्वच्छता गतिशीलता का गुण चालुक्य काल की मूर्तियों का विशेष गुण माना जाता है। आगे चलकर चालुक्य मूर्तियों में शिल्प ग्रन्थों में मौजूद लक्षणों की प्रधानता दिखने लगी, जिससे उनमें यांत्रिकता आने लगीऔर भावों की अभिव्यक्ति कमजोर होने लगी। इसके कारण मूर्ति स्वरूप की कल्पना में गिरावट आई और प्रत्येक छोटे स्थान में भी मूर्ति बनाने का प्रयास होने लगा। पट्टडकल में मिली त्रिपुरांतक की मूर्तियों के साथ–साथ कैलाश को उठाए रावण की मूर्ति को विशेष प्रंशसा मिली है। इसके अलावा विरूपाक्ष मंदिर में प्रेमी युगल और द्वारपाल की मूर्ति, छत पर बने सूर्य और मल्लयुद्धरत दो आकृतियाँ तथा मल्लिकार्जुन मंदिर में खम्भों पर बने बौनों का शिल्प दर्शनीय है।

पट्टडकल के मन्दिरों में चालुक्य कालीन स्थापत्य पूरे निखार पर है इसलिये इसे 1987 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

निष्कर्ष– चालुक्य कालीन वास्तुकला/स्थापत्य कला, मूर्तिकला भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में विशेष योगदान देती है। दक्षिण भारत के यह मन्दिर समूह विश्व में भारतीय कला विशेषता एवं उत्कर्षता की पहचान कराने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। चालुक्य कालीन इन मन्दिरों के अध्ययन से हमें भारत के शिल्पकारों और वास्तुकारों की कार्य कुश्लता का ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही साथ जो मन्दिर की निर्माण योजना प्राचीन धर्म और शास्त्रों के आधान पर की गयी है उसे जो नई पीढ़ी का ज्ञानवर्धन होता है, वह अमूल्य है, चालुक्य राजा का यह योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी, डॉ0 मारूति नन्दन, मध्यकालीन मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0सं0 51, 52, 58।
2. प्रताप, डॉ0 रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ0 सं0 566, 567, 568.
3. कासलीवाल, मीनाक्षी, 'भारती', भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृष्ठ सं0 116, 117, 118, 119, 120, 122, 131, 136.

*****